भीष्म साहनी के नाटक : 'हानूश' में वर्णित निम्न मध्य वर्गीय जीवन की विसंगतियाँ

दीपशिखा यादव
शोध छात्रा
हिन्दी विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी

भीष्म साहनी का जीवन दर्शन उनके साहित्यिक मूल्य मुख्यतः मार्क्सवाद और विभाजन के बाद की परिस्थितियों से प्रभावित हैं। उनके साहित्य और जीवन–दृष्टि में प्रतिबद्धता के साथ–साथ एक उन्मुक्त संवेदनशीलता रचनात्मकता का विकास सहजता से देखी जा सकती है। नयी पीढ़ी, नए सृजन, नई संभावनाओं के प्रति सदैव अत्याधिक आत्मीय, सजग और जिज्ञासु दृष्टि से देखने वाली उनकी रचनात्मक प्रवृत्ति ने ही उन्हें इतने वर्षों के बाद कथा–साहित्य से नाट्य–लेखन की ओर उन्मुख किया। **'हानूश'** नाटक में परिवेशगत यथार्थ का जो स्वरूप विद्यमान है वह देशकाल निरपेक्ष होकर मानवीय संवेदनाओं के द्वार से निकलकर आज भी हमारे सामने प्रत्यक्ष खड़ा है।

चेक–इतिहास की घटना से सम्बद्ध होते हुए भी 'हानूश' ऐतिहासिक नाटक की श्रेणी में नहीं रखा जाता है। नाटक की भूमिका में भीष्म साहनी ने स्वीकार भी किया है–**''यह नाटक ऐतिहासिक नाटक नहीं, न कि इसका अभिप्राय घड़ियों के अविष्कार की कहानी कहना है। कथानक के दो–एक तथ्यों को छोडकर, लगभग सभी कुछ काल्पनिक है। नाटक एक मानवीय स्थिति को मध्ययुगीन परिप्रेक्ष्य में दिखाने का प्रयास मात्र है।''** ताला बनाने वाले सामान्य मिस्त्री 'हानूश' के माध्यम से एक कलाकार की सृजनेच्छा शक्ति और संकल्प की तीव्रता को पूरी संवेदनशीलता से प्रस्तुत किया गया है। सरसरी दृष्टि से देखने पर यह मामूली कुफ्तसाज़ की कहानी लगती है, लेकिन वास्तव में यह सत्ता के हाथों पिसते सम्पूर्ण मध्य वर्ग एवं निम्न वर्ग की त्रासद कथा है। समसामयिक अनुभूति के स्तरों पर सृजनधर्मा हानूश की दुर्गति के समानांतर भीष्म साहनी ने अपने समय के कलाकारों–साहित्यकारों की शासन के हाथों उत्पीड़ित नियति को वर्णित किया है। उन्होंने कला और कलाकार के अस्तित्व और अस्मिता के संकट को पहचाना और उनके अवचेतन जगत में छिपी सत्ता–शासन के हाथों की दुर्नियति हानूश के जीवन–चरित्र में साकार होकर युग के सामने विचारणीय प्रश्न खड़े कर गई। हानूश नाटक के भीतर की सामन्तशाही की वेदी पद एक कलाकार के निरीह बलिदान की कथा 75–76 के असंख्य मूक बलिदानों की व्यथा प्रतीकात्मक रूप में व्यक्त की हुयी है। मध्य वर्ग आज भी सत्ता और धर्म के गठजोड़ की साजिशों तले शोषण का शिकार बनता है। इसमें संदेह नहीं है कि धर्म और सत्ता का कुचक्र व्यवस्था का चेहरा आज भी 'सलमान रशदी' और 'तसलीमा नसरीन' जैसे कलाकारों की चेतना को आतंकित किए हुए हैं।

हानूश एक मध्यवर्गीय चरित्र है। चूंकि वह घड़ी बनाने में अपना सारा वक्त जाया करता है। इसी कारण ताले नहीं बना पाता है और उसे आर्थिक तंगी का सामना करना पड़ता है। नाटक के आरंभ में ही मध्य वर्गीय आर्थिक संकट की ओर संकेत किया गया है–**''जो आदमी अपने परिवार का पेट नहीं पाल सकता, उसकी इज्जत कौन औरत करेगी?''**। पत्नी कात्या के ऐसे ही कड़वाहट और पीड़ा भरे संवादो से नाटक का प्रारम्भ होता है। पति–पत्नी के बीच सहज कोमल आन्तरिक सूत्र होते हुए भी अर्थ–संकट से पैदा हुआ जो तनाव है, वह स्थाई न होते हुए भी क्रूर सत्य है–**''मेरा बट सर्दी में ठिठुरकर मर गया। जाड़े के दिनों में सारा वक्त खाँसता रहता था। घर में इतना ईंधन भी नहीं था कि मैं कमरा गर्म रख सकूँ। हम सायों में लकड़ी की खपचियां मांग–मांग कर आग जलाती रहीं। ..... किधर गया मेरा मासूब बेटा? ..... क्या मैं इससे कुछ अपने लिए मांगती हूँ। मैंने अपने लिए कभी जेवर मांगा है या कपड़ा मांगा है? पर कौन माँ अपने बच्चों को अपनी आँखों के सामने ठिठुरता देख सकती है?''** आर्थिक संकट दाम्पत्य सम्बन्धों में अस्थाई कटुता अवश्य लाता है, पर वस्तुतः हानूश एक कोमल हृदय प्राणी, दायित्वपूर्ण मनुष्य और जीवन के कटु सत्य का भोक्ता रचनाशील प्राणी है और काव्या दिल से हानूश को चाहती है। हानूश 17 सालों तक घड़ी बनाने में जुटा रहा क्योंकि उसमें अकूत जिजीविषा थी। लोहार भी उसे यही बात कहता है–**''कामयाब हो जाओगे हानूश तो, तुम्हारी पत्नी भी तुम्हारी इज्जत करेगी। जो लोग कामयाब नहीं होते उनकी पत्नियाँ सबसे ज्यादा उन्हें दुत्कारती हैं।''** कात्या और हानूश दोनों के बीच नाटककार ने बड़ी कुशलता से दाम्पत्य सम्बन्धों का निर्वाह दिखाया है। हानूश कातया को दुखी करना नहीं चाहता, लेकिन वह घड़ी बनाना नहीं छोड़ सकता। दूसरी ओर कात्या भी चाहती है कि हानूश घड़ी बनाए लेकिन यथार्थ के आर्थिक थपेड़े उसे हानूश को बुरा–भला कहने पर मज़बूर कर देते हैं। घड़ी बनाने के चक्कर में हानूश का परिवार विपन्नता का शिकार हो गया। 'हानूश' जो परिवार का खर्च चलाता था, का वह अब घड़ी बनाने में व्यस्त था। नाटक में संघर्ष की प्रक्रिया घड़ी निर्माण की शुरूआत स प्रारंभ हो जाती है। पहले पारिवारिक समस्याएँ सामने आती हैं। फिर धीरे–धीरे सत्ता औरधर्म की साजिशों का पर्दाफाश होता है। अर्थ की बढ़ती महत्ता को वे साफ महसूस कर रहे थे। व्यापारियों के बढ़ते वर्चस्व के कारण आने वाले समय में पैसे की मान्यता और बढ़ेगो, इसे भी स्पष्ट देख रहा था। सामाजिक और व्यक्तिगत जीवन में सत्ता, राजनीति, धर्म एवं व्यापारी वर्ग के बढ़ते हस्तक्षेप की दर्दनाक कहानी भीष्म साहनी ने 'हानूश' के माध्यम से प्रस्तुत की है, जो कथा के अलग–अलग धरातल पर व्यक्तिगत संकट और सामाजिक लोलुपता को भी अभिव्यंजित करती है। इस नाटक में बादशाह सत्ता का उच्च वर्ग का प्रतीक बनकर आता है, व्यापारी, पादरी, सत्ता के अन्य अधिकारी मध्य–वर्ग के प्रतीक हैं तथा आनूश निम्न वर्ग का।

मध्यवर्गीय व्यक्ति हमेशा महत्वाकांक्षी होता है। प्रारम्भ से ही नाटककार इस बात को स्पष्ट करता है। हानूश का पादरी भाई हानूश को घड़ी बनाना छोड़ देने की नसीहत देता है। वह बताता है कि–**''एक बार गिरजे में मुझे छोटी लाट पादरी बनाने को**

बात चली। जब इसकी खबर मुझे मिली तो मैं उत्तेजित हो उठा। मेरी नींद हराम हो गई। सारा वक्त आंखों के सामने छोटा लाट पादरी ही घूमने लगा। कब मैं छोटा लाट पादरी बनूँगा और नया लबादा पहनूँगा और चांदी का मिझमिलाता सलीब छातो पर लटकता होगा? रात को सो नहीं पाऊँ। कभी एक बड़े पादरी से मिलने जाऊँ, कभी दूसरे से।'' सत्ता या पद का मोह मध्यवर्गीय व्यक्ति कभी नहीं छोड़ सकता चाहे वह दुनिया को त्याग ही क्यों न चुका हो। पादरी ख्वाब नहीं देखता, सदा अपने को छोटा मानता है और इस तरह समय रख बड़े से बड़े ओहदा भी हथिया लेता है। हानूश चूंकि माली तौर पर उससे कमजोर है इसलिए वह उसे हमेशा नसीहत देता रहता है। वह स्वयं महत्वाकांक्षी है पर नही चाहता कि हानूश महत्वाकांक्षी बने।

पादरी का चरित्र साधारण महत्वाकाक्षी मध्यवर्गीय व्यक्ति का प्रतीक है। लेकिन हानूश विपरीत कर्मठ कलाकार है–**''मैं घड़ीसाज बनने के सपने तो नहीं देखता बड़े भाई, मैं तो घड़ी बना रहा हूँ, वह कैसे बने इसी के बारे में सोचता रहता हूँ और कोई बात मेरे जेहन में नहीं आती।''** घड़ी के निर्माण के साथ ही समीकरण तुरन्त बदल जाते हैं। घड़ी निर्माण के साथ ही संघर्ष की प्रक्रिया आरम्भ हो जाती है। कला–साधना की इस महत्वपूर्ण उपलब्धि का श्रेय किसको मिले–हानूश, गिरजाघर के पादरियों को अथवा नगरपालिका के रूप में स्थापित तत्कालीन सामंतीय व्यवस्था के चालने वालों को? क्योंकि समय–समय पर वे घड़ी निर्माण के लिए हानूश को आर्थिक सहायता देते रहे हैं। यह परिप्रेक्ष महत्वपूर्ण है। नाटक में राज्य सत्ता, चर्च और उभरते व्यापारिक पूंजीवाद का द्वन्द्व है। शीतयुद्ध की तरह लगभग सतह के नीचे चलने वाला यह द्वन्द्व हानूश द्वारा घड़ी का अविष्कार करने पर बाहर फूट पड़ता है। नाटक में इस द्वन्द्व के प्रतिपक्ष में रिनेशा और प्रति धर्म सुधार आन्दोलन की प्रतिध्वनियाँ व्याप्त हैं। हानूश द्वारा घड़ी का अविष्कार वास्तव में निरेशांकालीन अन्वेषणों का प्रतीक है। इस समय तक सामंती राज्य और चर्च का गठबंधन सुदृढ़ है। छोटे लाट पादरी की तरह ही लाट पादरी भी घड़ी के अविष्कार के प्रति विपरीत सोच रखता है–**''घड़ी बनाने की कोशिश ही खुदा की तौहीन करना है। भगवान ने सूरज बनाया है, चांद बनाया है, अगर उन्हें घड़ी बनाना मंजूर होता तो क्या वह घड़ी नहीं बना सकते थे? उनके लिए क्या मुश्किल था? इस वक्त आसमान में घड़ियाँ ही घड़ियाँ लगी होती। सूरज और चाँद ही भगवान की दी हुई घड़ियाँ हैं। जब भगवान ने घड़ी नहीं बनाई तो इंसान का घड़ी बनाने का मतलब ही क्या है?''** हानूश द्वारा यूरोप के किसी गिरजे पर इंसान के ही हाथ की सनी घड़ी होने की चर्चा करने पर लाट पादरी नाराज़ होकर कहता है–.....''तुम शैतान की औलाद हो जो घड़ी बना रहे हैं। घड़ी बनाना इन्सान का काम नहीं, शैतान का काम है ..... वह किसी प्राटेस्टेन्ट मतवालों का गिरजा होगा। वे सब शैतान के बच्चे हैं।'' यहाँ स्पष्ट हो जाता है कि चर्च प्रतिसत्ता है। वैज्ञानिक खोजों और अन्वेषणों के प्रति चर्च का रूख प्रतिक्रियावादी है। ईश्वर के नाम पर ये उच्च मध्यवर्गीय लोगों को आगे बढ़ने से रोकना चाहते हैं, जिससे उनका वर्चस्व बना रहे। लेकिन प्रति धर्म सुधार आन्दोलन के फलस्वरूप प्रोटेस्टेन्ट सम्प्रदाय के

अस्तित्व के संकेत भी है। जहाँ धर्म और सत्ता की विरोधात्मक और विध्वंसात्मक शक्ति का सत्य सामने आया है। वही जनशक्ति एवं सामाजिक शक्ति के संघर्ष को भी बुना गया इस नाटक में। 'हानूश' इसी जनशक्ति के दूत के रूप में हमारे सामने प्रस्तुत होता है। न जाने कितने घात–प्रतिघात झेलने के बाद पारिवारिक विपन्नता और अभावग्रस्तता की सीमाओं से गुजरने के बाद पारिवारिक, आशा और निराशा के अनेक झटके खाने के बाद अन्ततः हानूश घड़ी बनाने में सफल हो जाता है। उसकी यह सफलता जनक्रांति में सहायक होती है–उसकी अदम्य जीजिविषा उसकी पुत्री यांका, उसकी पत्नी कात्या का सहयोग, लोहार और ऐमिल का साथ और इन सबसे ऊपर जेकब का घड़ीसाज के रूप में तैयार होना।

'हानूश' के संघर्ष यातना तथा सफलता असफलता की कथा के माध्यम से सत्ता के दोहरे चरित्र को बारीकी से इस नाटक में रेखांकित किया गया है। लोहार सत्ता के इस चरित्र का दो टूक शब्दों में भंडाफोड़ करता है–**''बादशाह की इसी में बादशाहत होती है। उसके हाथ में भगवान ने तराजू दे रखा है। जो भी पलड़ा भारो हाता है, राजा दूसरे पलड़े का वजन बढ़ाकर फिर से एक जैसा कर लेता है। ...राजा कभी किसी का दोस्त नहीं होता। वह कभी एक की पीठ थपथपाता तो कभी दूसरे की। वह देखेगा कि दस्तकार सिर उठाने लगे हैं तो वह सामन्तों और गिरजेवालों की पीठ थपथपाएगा, जब देखेगा कि गिरजवाले सिर उठा रहे हैं तो दस्तकारों की पीठ थपथपा देगा यह नीति है।''** नाटककार ने इस नाटक के माध्यम से समाज की अपनी मर्जी से चलाने वाली शोषणकारी और दमनकारी शक्तियों की पहचान कराई है। सत्ता की निरंकुश अहमन्नयता, धार्मिक कट्टरता और व्यापारियों की स्वार्था–लोलुप प्रवृत्ति तीनों की धूरी के बीच पिसता है 'हानूश' यानि निम्न मध्य वर्ग। सृजनशील कलाकार की यह व्यक्तिगत त्रासद नहीं है अपितु अपने आप में यह एक सामूहिक त्रासद घटना है। जब तक घड़ी नहीं बनी थी तब तक हानूश की कोई पूछ नहीं थी, घड़ी बनते ही सभी उसे हथियाने के लिए लोग लपकने लगते हैं। हानूश का शोषण तीनों के माध्यम से होता है–सत्ता, धर्म और पूंजीपति वर्ग। महाराज को प्रसन्न करने के लिए उसे सीखे–सीखाए चापलूसी भरे शब्द दोहराने पड़ते हैं–**''हुजूर यह घड़ी मैंने बनाई है, महाराज के राज्य की शान बढ़ान के लिए अपने महाराज की खुशी के लिए, महाराज के कदमों पर अपनी नाचीज़ ईज़ाद भेंट करने के लिए, महाराज की इस राजधानी की रौनक बढ़ाने के लिए .....''** नगरपालिका वाले अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिए हानूश को माध्यम बनाते हैं।

सत्ता, धर्म और पूंजीपतियों की शोषण–नीति के विपक्ष में 'हानूश' का चरित्र गढ़ा गया है। यथाथ की जमीन पर खड़ा हानूश हाड़–मांस युक्त सचमुच का इंसान है। वह कहीं से भी अतिमानव नहीं है, लेकिन परिस्थितियों की टकराहट से उत्पन्न इसकी अभिव्यक्ति और उद्भावनाएँ दूर तक सुनी जा सकती हैं। हानूश के व्यक्तित्व को स्पष्ट करने में हुसाक और जार्ज की उक्तियां सहायक होती है। हुसाक समझता है कि हानूश अंदर से पिलपिता है, वह कभी भाई तो कभी व्यापारियों तो कभी बादशाह का हूक्म बजा लाएगा।

लेकिन जार्ज ने उसके व्यक्तित्व को ज्यादा सूक्ष्मता से समझा है–**''पिलपिला होता तो इतनी लगन के साथ पूरे 96 बरस एक घड़ी बनाने में नहीं लगा देता। उसमें अपना जीवन नहीं गला देता। अन्दर से पिलपिला होता तो कब का घड़ी बनाना छोड़ चुका होता। वह पिलपिला नहीं, अंदर से पत्थर की तरह मजबूत है।''** हानूश मूक प्रतिशोध लेने वाला नायक है, इस सम्पूर्ण नाटक में। हानूश मात्र एक व्यक्ति, देश और युग नहीं, अपितु वह इन सबसे अधिक व्यापक और गम्भीर जीवन सत्य और युगीन विसंगतियों को खोलता है। वह जनक्रांति का वाहक बनकर आता है। जकब को पनाह देने के कारण ही व्यापारी टावर भी उसके मजबूत व्यक्तित्व की ओर इंगित करता है–**''अपनी जान जोखिम में डालकर हानूश ने उसे पनाह दी थी और आज तक वह हानूश के घर में रह रहा है। अन्दर से न कोई पिलपिता होता है, न मजबूत। वही आदमी, जिसे हम पिलपिता समझते हैं, वक्त आने पर चट्टान की तरह खड़ा हो जाता है और जिसे सुरमा समझते हैं, वक्त आने पर भाग खड़े होते हैं।''**

इस नाटक की नाटकीयता शब्दों की अपेक्षा, चरित्रों और परिस्थितियों की विचित्रता के कारण उत्पन्न हुए द्वन्द्व एवं तनाव, विडम्बना और मानमीय करूणा के कारण ही उभरती है। हानूश ने घड़ी को नष्ट करने के बजाय शासन द्वारा दिए गए कष्टों को परे रखकर उसे ठीक कर फिर से चालू कर दिया। वास्तव में यह तत्कालीन बादशाही प्रवृत्ति को एक कलाकार द्वारा दिया गया प्रतिदान मात्र न होकर प्रतिशोध की मौन अभिव्यक्ति ही थी। हानूश क्या कोई भी कलाकार अपनी कला को नष्ट नहीं कर सकता। प्रगतिशील विचारधारा के जीवन मूल्यों को नाटककार ने इस नाटक के द्वारा सजीव रूप में उपस्थित किया है। हानूश जैसा व्यक्ति भी बहुत बड़ा काम कर सकता है। प्रतिभा किसी अभिजात वर्ग की बपौती नहीं है। यही मामूली व्यक्ति अकेला और निहत्था होते हुए भी सत्ता के आगे चुनौती बनकर खड़ा हो जाता है–**''घड़ी बन सकती है, घड़ी बन्द भी हो जाती है। घड़ी बनाने वाला अंधा भी हो सकता है, मर भी सकता है, लेकिन यह बहुत बड़ी बात नहीं है। जेकब चला गया ताकि घड़ी का भेद जिंदा रह सके, यही सबसे बड़ी बात है।''** सत्ता हानूश को समाप्त कर सकती है, उसक काम, शिल्प–साधन के परिणाम तथा संघर्ष को नहीं। हानूश का यह कहना कि–**''घड़ी बन्द नहीं होगी कभी भी बंद नहीं होगी''**, क्रांति, सृजन और मनुष्य और उसके भविष्य में विश्वास की ओर संकेत करता है। उसकी प्रारम्भिक अदम्य जीजिविषा का पुनः संकते है।

सन्दर्भ सूची

1.सारिका, नवम्बर 1978, पृ0 14
2.भीष्म साहनी : हानूश (नाटक) राजकमल प्रकाशन, संस्करण, 1977
3.साहनी भीष्म जलियावाला बाग, नेशनल बुक ट्रस्ट इंडिया संस्करण, 1994 ई0
4.साहनी भीष्म, मेरे साक्षात्कार, किताब घर, संस्करण, 1996 ई0
5.हिन्दी नाटक की रूपरेखा : ओझा दशरथ
6.हिन्दी नाटक आज तक – गौतम डॉ0 वीणा